इकाई 8 मुस्लिम चिंतनः सर सैयद अहमद खान, मौहम्मद इकबाल, मौलाना मौदुदी और मौहम्मद अली जिन्ना

इकाई की रूपरेखा

8.1 प्रस्तावना

8.2 सर सैयद अहमद खान (1817-1898)

8.2.1 आधुनिक शिक्षा के प्रति योगदान

8.2.2 हिन्दू-मुस्लिम एकता

8.3 मौहम्मद इकबाल (1876-1938)

8.3.1 आरंभिक जीवन

8.3.2 राष्ट्रवाद पर इकबाल के विचार

8.3.3 राजनीतिक गतिविधियाँ

8.4 मौलाना मौदुदी (1903-1979)

8.4.1 राष्ट्रवाद पर मौलाना मौदुदी के विचार

8.5 मौहम्मद अली जिन्ना (1876-1948)

8.5.1 हिन्दू-मुस्लिम एकता

8.5.2 जिन्ना और मुस्लिम लीग

8.5.3 द्विराष्ट्र सिद्धान्त

8.6 सारांश

8.7 अभ्यास प्रश्न

8.1 प्रस्तावना

आधुनिक भारत में मुस्लिम चिंतन को केवल इसके व्यापक परिवेश में सही ढंग से समझा जा सकता है। यह ध्यान देना जरूरी है कि मुस्लिम राजनीतिक चिंतन एक जटिल घटना थी जिसमें मुसलमानों के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक जीवन और औपनिवेशिक शासन के साथ अंतःसंपर्कात्मक प्रक्रिया शामिल थी। यह औपनिवेशिक शासन विशेष रूप से 1857 के विद्रोह के बाद भारत में स्थापित हुआ था। अनेक मुद्दे उभरकर सामने आए जैसे आधुनिक प्रवृत्तियों (tendencies) के संबंध में मुसलमानों का बहुत अधिक पिछड़ापन जो औपनिवेशिक शासन की स्थापना के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुआ था। मौजूदा और भावी शक्ति संरचनाओं (power structures) में मुसलमानों सहित विभिन्न सामाजिक समूहों को शामिल करने का प्रश्न एक महत्वपूर्ण मुद्दा बन गया था जिस पर सभी समूहों में व्यापक चर्चा हुई। इसी प्रकार विभिन्न समुदायों की धार्मिक-सांस्कृतिक पहचान का वह मुद्दा भी महत्वपूर्ण था जो उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध और बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में पुनःपरिभाषा की प्रक्रिया से गुजरा था। ये सभी मुद्दे विभिन्न सामाजिक समूहों के अनेक उत्तरों के साथ उभरकर सामने आए और अंत में उन्होंने अंतःसामुदायिक संबंधों (inter-community relations) को प्रभावित किया। इन घटनाओं ने उन राजनीतिक प्रक्रियाओं को भी प्रभावित किया जो उपनिवेश विरोधी राष्ट्रवादी विचारधारा की अभिव्यक्ति को प्रकट कर रही थीं।